29 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा गुण ग्राहक बन

सच्चा वैष्णव बनने का अनुभव

मैं आत्मा इस शरीर में विराजमान

➳ _ ➳ पार्ट बजाते हुए

➳ _ ➳ श्रेष्ठ परिवर्तन की ओर अग्रसर आत्मा हूं

➳ _ ➳ मैं गुण ग्राहक हूं

→ मैं हर आत्मा के गुण देख रही हूं

→ मैं सदा गुण देखने की अभ्यासी आत्मा

- हर श्रेष्ठ ब्राह्मण में
- परमात्म संतान में
- जो बाबा ने देखा
  - वह हर गुण मैं भी देख रही हूं
  - हर गुण को मैं स्वयं में समा रही हूं

→ मैं आत्मा गुणों का शुद्ध भोजन करने वाली

- सच्ची-सच्ची वैष्णव हूं
- गुणमूर्त बन रही हूं

➳ _ ➳ मैं गुणमूर्त आत्मा मास्टर नॉलेज फुल हूं

→ अपनी नॉलेज की शक्ति से

- सब के गुणों को देख रही हूं
- अवगुणों को बुद्धि से दूर ही रखती हूं

→ अपनी नॉलेज की लाइट से माइट से

- सबके शुभचिंतक बन शुभ भावना से
- अवगुणों का परिवर्तन कर रही हूं
- मैं बदल रही हूं
- जग बदल रहा है

➳ _ ➳ मैं कर्मों की गति की ज्ञाता आत्मा हूं

→ मेरा हर संकल्प हर बोल हर कर्म

- श्रेष्ठ है
- प्रभु पसंद है

→ मेरी बुद्धि मेरी दृष्टि सदा शुद्ध है

➳ _ ➳ मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूं

→ ज्ञान सूर्य बाबा से योगयुक्त मुझ आत्मा से निकली

- हर वाइब्रेशन हर किरण
  - मेरे किचड़े को भस्म कर रही हूं
  - सर्व के किचड़े को भस्म कर रही है

→ हर आत्मा गुण मूर्त बन रही है

→ मैं गुण मूर्त बन गई हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हूं

→ सदा सर्वशक्तिमान बाप के साथ हूं

→ सब समाने की शक्ति है मुझ में

→ मैं सबके संस्कार अपने भाइयों के संस्कार

◆ स्वयं में समा रही हूं

➳ _ ➳ मैं सब की शुभचिंतक आत्मा हूं

→ सब के गुणों का वर्णन कर रही हूं

→ बाबा को समक्ष रख शुभ भावना

◆ हर आत्मा तक पहुंचा रही हूं

→ हर आत्मा गुण मूर्त बन गई है

➳ _ ➳ मैं गुण माला से श्रृंगार करने वाली आत्मा

→ सदा प्राप्ति स्वरूप बन गई हूं

→ संतुष्टता का प्रत्यक्षफल खाने वाली आत्मा हूं

→ सदाकाल का अतींद्रिय सुख अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ मैं विष्णु की राज्य अधिकारी आत्मा हूँ